सूरह — एक कहानी

सूरह अल-बक़रह

गाय

पूरा सफ़र — हिदायत, भरोसा, और एक घर दोबारा खड़ा हुआ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 2 • 286 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

ज़ालिकल्-किताबु ला रैब फ़ीह; हुदल्-लिल्-मुत्तक़ीन
2. ये वो किताब है जिस में कोई शक नहीं, अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत।

इन्नी जा'इलुन फ़िल्-अर्ज़ि ख़लीफ़ह
30. बेशक मैं ज़मीन में एक जानशीन बनाने वाला हूँ।

व ला तल्बिसुल्-हक़्क़ बिल्-बातिलि व तक्तुमुल्-हक़्क़ व अन्तुम तअ्लमून
42. और हक़ को बातिल के लिबास में मत छुपाओ, न हक़ को जानते-बूझते छुपाओ।

वस्त'ईनू बिस्-सब्रि वस्-सलाह
45. और सब्र और नमाज़ से मदद माँगो।

व क़ूलू लिन्-नासि हुस्ना
83. और लोगों से अच्छी बात कहो।

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना; इन्नक अन्तस्-समी'उल्-'अलीम
127. हमारे रब, ये हम से क़ुबूल फ़रमा। बेशक तू ही सुनने वाला, जानने वाला है।

एक किताब जिस में कोई शक नहीं

बेटा, हम क़ुरआन की सब से लंबी सूरह तक पहुँच गए, और सब से अज़ीम में से एक। ये इतनी लंबी है कि हम इसे दो हिस्सों में लेंगे, क्योंकि ये धीरे पढ़े जाने की हक़दार है।

शुरू करने से पहले, जान लीजिए कि नबी ﷺ ने इस के बारे में क्या फ़रमाया: **अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ — शैतान उस घर से भागता है जिसमें सूरह अल-बक़रह पढ़ी जाए।** और आपने फ़रमाया कि सूरह अल-बक़रह और सूरह आल-'इमरान क़ियामत के दिन दो बादलों की तरह आएँगी, अपने पढ़ने वाले की तरफ़ से बहस करती हुई।

'**अलिफ़ लाम मीम। ज़ालिकल्-किताबु ला रैब फ़ीह — ये वो किताब है जिस में कोई शक नहीं — हुदल्-लिल्-मुत्तक़ीन — अल्लाह से डरने वालों के लिए**

हिदायत।'

बेटा, एक बात ग़ौर कीजिए जो पहले लोगों को उलझाती है। **ये किताब 'मुत्तक़ीन' के लिए हिदायत है — उन के लिए जिन में पहले से तक़वा है। मगर क्या ये किताब तक़वा पैदा करने के लिए नहीं?**

उलमा ने समझाया: **हिदायत के दो दर्जे हैं। एक रास्ता दिखाने की हिदायत है, जो हर एक को पेश की जाती है। और एक उस रास्ते पर चलाए जाने की हिदायत है, जो उन के लिए है जो पहली क़ुबूल करते हैं।**

बेटा, तो **ये किताब किसी को भी सड़क दिखा देगी। मगर ये सिर्फ़ उस शख़्स के साथ चलती है जो चलने को तैयार हो।**

और फिर मुत्तक़ीन का बयान पाँच चीज़ों में: '**अल्लज़ीन युअ्मिनून बिल्-ग़ैब** — जो **ग़ैब** पर ईमान लाते हैं — **व युक़ीमूनस्-सलाह** — और नमाज़ क़ायम करते हैं — **व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून** — और जो हमने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं — **वल्-लज़ीन युअ्मिनून बिमा उन्ज़िल इलैक व मा उन्ज़िल मिन क़ब्लिक** — और जो उस पर ईमान लाते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया और जो तुम से पहले उतारा गया — **व बिल्-आख़िरति हुम यूक़िनून** — और आख़िरत पर वो **यक़ीन** रखते हैं।'

बेटा, पहली बात ग़ौर कीजिए: **ग़ैब पर ईमान — जो आप देख नहीं सकते। वहीं से ईमान शुरू होता है। जो आँखों के सामने रख दिया जाए उस पर तो कोई भी ईमान ले आएगा; उस में कुछ नहीं रखा।**

और आख़िरी ग़ौर कीजिए: '**यूक़िनून**' — उन्हें आख़िरत पर **यक़ीन** है। **उम्मीद नहीं, राय नहीं। यक़ीन।**

फिर सूरह उन का बयान करती है जो इनकार करते हैं, और फिर — कहीं ज़्यादा तफ़्सील से — **मुनाफ़िक़ों** का, जिन्होंने अपनी ज़ुबानों से वो कहा जो उनके दिलों में न था। और अल्लाह उनकी दो मिसालें देते हैं।

पहली: एक आदमी जिसने आग जलाई, और जब उसने उसके इर्द-गिर्द सब कुछ रौशन कर दिया, अल्लाह ने उनका नूर ले लिया और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया,

देखने से क़ासिर। बेटा, **रौशनी उनके हाथों में थी और छीन ली गई।**

दूसरी: अंधेरे में एक तूफ़ानी बारिश, गरज और बिजली के साथ — '**यज्'अलून असाबि'अहुम फ़ी आज़ानिहिम मिनस्-सवा'इक़ि हज़रल्-मौत — वो कड़क से मौत के डर से अपनी उँगलियाँ अपने कानों में दे लेते हैं — कुल्लमा अज़ा-अ लहुम मशौ फ़ीहि व इज़ा अज़्लम 'अलैहिम क़ामू — जब भी वो उन के लिए रौशनी करे, वो उस में चल पड़ते हैं; और जब उन पर अंधेरा छा जाए, वो खड़े रह जाते हैं।**'

बेटा, क्या तस्वीर है: **एक ऐसा शख़्स जो तब चलता है जब दीन आसान हो और उस लम्हे जम जाता है जब वो उस से कुछ माँगे।** बेटा, इस के सामने अपने आप को ईमानदारी से परखिए।

ज़मीन पर एक जानशीन

फिर सूरह तमाम लोगों को अपने रब की इबादत की तरफ़ बुलाती है — '**या अय्युहन्-नासुअ्-बुदू रब्बकुमुल्-लज़ी ख़लक़कुम वल्-लज़ीन मिन क़ब्लिकुम ल'अल्लकुम तत्तक़ून**' — और वो अज़ीम चैलेंज जारी करती है: **अगर तुम उस के बारे में शक में हो जो हमने उतारा, तो इस जैसी एक ही सूरह ले आओ, और अल्लाह के सिवा अपने गवाह बुला लो, अगर तुम सचे हो।**

और फिर, बेटा, ख़ुद आपके आग़ाज़ की कहानी:

'**व इज़ क़ाल रब्बुक लिल्-मलाइकति इन्नी जा'इलुन फ़िल्-अर्ज़ि ख़लीफ़ह — और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा: बेशक मैं ज़मीन में एक जानशीन बनाने वाला हूँ।**'

और फ़रिश्तों ने पूछा: '**अ तज्'अलु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्-दिमा-अ व नह्नु नुसब्बिहु बि-हम्दिक व नुक़द्दिसु लक — क्या तू उस में ऐसे को रखेगा जो उस में फ़साद करे और ख़ून बहाए, जब कि हम तेरी हम्द के साथ तस्बीह करते और तेरी पाकी बयान करते हैं? — क़ाल इन्नी अअ्लमु मा ला तअ्लमून — उसने कहा: बेशक मैं वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।**'

बेटा, **ये ए'तिराज़ न था; ये एक सवाल था। और जवाब था: मैं वो जानता हूँ जो तुम नहीं।**

'**व 'अल्लम आदमल्-अस्मा-अ कुल्लहा — और उसने आदम को नाम सिखाए — सारे के सारे।**'

बेटा, देखिए इंसान को किस चीज़ ने मुमताज़ किया: **इल्म।** ताक़त नहीं, इबादत नहीं — **फ़रिश्तों के पास इबादत की कमी न थी। उसे जानने और नाम देने की सलाहियत दी गई।**

और जब फ़रिश्ते उन के नाम न बता सके और आदम ने बता दिए, उन्होंने कहा: '**सुब्हानक ला 'इल्म लना इल्ला मा 'अल्लम्तना — तू पाक है; हमें कोई इल्म नहीं सिवाए उस के जो तूने हमें सिखाया — इन्नक अन्तल्-'अलीमुल्-हकीम**।'

बेटा, ये जुमला सीख लीजिए और इस्तेमाल कीजिए। **ये सब से ईमानदार बात है जो कोई अपने इल्म के बारे में कह सकता है।**

फिर सजदे का हुक्म, और इब्लीस का ग़ुरूर से इनकार। और फिर आदम और उनकी बीवी जन्नत में, और वो फिसलना, और वो अल्फ़ाज़ जिन्होंने उन्हें बचा लिया:

'**फ़-तलक़्क़ा आदमु मिर्-रब्बिही कलिमातिन फ़-ताब 'अलैह — फिर आदम ने अपने रब से कुछ अल्फ़ाज़ पाए, तो उसने उसकी तौबह क़ुबूल कर ली — इन्नहू हुवत्-तव्वाबुर्-रहीम**।'

बेटा, इसे देखिए: **अल्लाह ने उन्हें सिखाया कि तौबह कैसे की जाए। लौटने के अल्फ़ाज़ ख़ुद उस ज़ात की तरफ़ से एक तोहफ़ा थे जिसकी तरफ़ लौटा जा रहा था।**

'**फ़-इम्मा यअ्तियन्नकुम मिन्नी हुदन फ़-मन तबि'अ हुदाय फ़-ला ख़ौफ़ुन 'अलैहिम व ला हुम यह्ज़नून** — और जब तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करे — उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा न वो ग़मगीन होंगे।'

बेटा, **ये वादा ज़मीन पर इंसानी ज़िंदगी के बिल्कुल आग़ाज़ में किया गया, और ये कभी वापस नहीं लिया गया।**

हक़ को बातिल का लिबास मत पहनाओ

बेटा, अब इस सूरह का एक लंबा हिस्सा बनी इस्राईल को मुख़ातिब करता है — और मैं चाहता हूँ कि आप इसे ठीक अंदाज़ में पढ़ें। **ये इस लिए नहीं लिखा गया कि हम अपने आप को बरतर समझें। ये इस लिए लिखा गया कि हम इसे दोहराएँ नहीं। इस में हर तंक़ीद एक आईना है जो हर उस जमाअत के सामने रखा गया है जिसे किताब मिली हो।**

'या बनी इस्राईलज़्-कुरू नि'अ्मतियल्-लती अन्'अम्तु 'अलैकुम व औफ़ू बि-'अह्दी ऊफ़ि बि-'अह्दिकुम — ऐ बनी इस्राईल, मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की, और मेरा अह्द पूरा करो, मैं तुम्हारा अह्द पूरा करूँगा।'

'व ला तल्बिसुल्-हक़्क़ बिल्-बातिलि व तक्तुमुल्-हक़्क़ व अन्तुम तअ्लमून — और हक़ को बातिल के लिबास में मत छुपाओ, न हक़ को जानते-बूझते छुपाओ।'

बेटा, **'ला तल्बिसू'** — हक़ को बातिल का **लिबास** मत पहनाओ, उसे सजाओ मत। **दो अलग गुनाहों का नाम लिया गया: हक़ को झूठ से मिलाना, और उस हक़ को छुपाना जो तुम जानते हो।**

बेटा, **दूसरा वाला ख़ामोश आलिम का गुनाह है — वो शख़्स जो सही जवाब जानता है और चुप रहता है क्योंकि बोलने से उसे कुछ क़ीमत चुकानी पड़ेगी।**

'अ तअ्मुरूनन्-नास बिल्-बिर्रि व तन्सौन अन्फ़ुसकुम व अन्तुम तत्लूनल्-किताब — क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो, जब कि तुम किताब पढ़ते हो? — अ फ़-ला तअ्क़िलून — तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लोगे?'

बेटा, **इस आयत ने बहुत से वाइज़ को रात भर जगाए रखा है, और ऐसा ही होना चाहिए।**

और फिर, बेटा, हर मुश्किल के लिए वो अज़ीम हिदायत:

'वस्त'ईनू बिस्-सब्रि वस्-सलाह — और सब्र और नमाज़ से मदद माँगो — व इन्नहा ल-कबीरतुन इल्ला 'अलल्-ख़ाशि'ईन — और बेशक ये भारी है सिवाए

आजिज़ी करने वालों पर।'

बेटा, **दो आले, और तीसरा कोई नहीं। सब्र — थामे रहना। और सलाह — उन की तरफ़ जाना।**

और दूसरे हिस्से की ईमानदारी ग़ौर कीजिए: **ये वाक़ई भारी है। अल्लाह ये दिखावा नहीं करते कि जब दिल कुचला हुआ हो तो नमाज़ में खड़ा होना आसान है। वो कहते हैं ये मुश्किल है — सिवाए उन के जिन में ख़ुशू' है।**

'अल्लज़ीन यज़ुन्नून अन्नहुम मुलाक़ू रब्बिहिम व अन्नहुम इलैहि राजि'ऊन — वो जिन्हें यक़ीन है कि वो अपने रब से मिलने वाले हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं।'

बेटा, **यही वो चीज़ है जो नमाज़ को हल्का कर देती है: मुलाक़ात का यक़ीन।**

नेमतें, और भूल जाना

फिर सूरह गिनवाती है कि उस क़ौम को क्या दिया गया, बेटा — और फ़ेहरिस्त हैरत-अंगेज़ है।

उन्हें फ़िरऔन से बचाया गया, जो उनके बेटों को ज़िबह कर रहा था। उन के लिए समंदर चीरा गया। सहरा में बादलों से उन पर साया किया गया। उन पर मन्न-ओ-सल्वा उतारा गया — आसमान से खाना, बिना किसी मेहनत के। एक चट्टान से पानी फूट पड़ा जब मूसा ने उसे मारा, बारह चश्मे, हर क़बीला अपना पानी लेने की जगह जानता था।

और उन्होंने क्या कहा? **'या मूसा लन नस्बिर 'अला त'आमिंव्-वाहिद — ऐ मूसा, हम एक ही क़िस्म के खाने पर सब्र नहीं कर सकते — फ़द्-'उ लना रब्बक युख़्रिज लना मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु मिम्-बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा व फ़ूमिहा व 'अदसिहा व बसलिहा — तो अपने रब से दुआ करो कि हमारे लिए ज़मीन से उसका साग, खीरे, लहसन, मसूर और प्याज़ निकाले।'**

और जवाब: **'अ तस्तब्दिलूनल्-लज़ी हुव अद्ना बिल्लज़ी हुव ख़ैर — क्या तुम बेहतर**

को कम-तर से बदल रहे हो?'

बेटा, **ये सवाल बहुत सी इंसानी चुनिंदा की तशख़ीस है। उन्हें आसमान से चीज़ दी गई, और उन्होंने प्याज़ माँगे।**

बेटा, और उन पर हँसने में जल्दी मत कीजिए। **पूछिए आपने क्या बदला है: रात की नमाज़ का सुकून एक और घंटे की स्क्रॉलिंग से; ईमानदार आमदनी की बरकत एक थोड़ी सी बड़ी बे-ईमान आमदनी से।**

और उनसे कहा गया कि बस्ती में '**हित्तह**' कहते हुए दाख़िल हों — हमारे बोझ हटा दे — और आजिज़ी से दाख़िल हों। और उन्होंने लफ़्ज़ बदल दिया और अलग अंदाज़ से दाख़िल हुए।

बेटा, ग़ौर कीजिए कि **वो ना-फ़रमानी कितनी छोटी लगती है और उसे कितनी संजीदगी से लिया गया। उन से एक लफ़्ज़ और एक अंदाज़ माँगा गया। हुक्म आसान था — और फिर भी बदल दिया गया। कुछ ना-फ़रमानी मुश्किल की वजह से नहीं होती; ये इस वजह से होती है कि किसी को कहा जाना पसंद नहीं।**

गाय

और अब, बेटा, वो वाक़िआ जो इस सब से लंबी सूरह को उसका नाम देता है — और इस का सबक़ वो नहीं जो ज़्यादा तर लोग तवक़्क़ो करते हैं।

एक आदमी क़त्ल किया गया था और क़ातिल का पता न था। मूसा (अलैहि0) ने उनसे कहा: '**इन्नल्-लाह यअ्मुरुकुम अन तज़्बहू बक़रह — अल्लाह तुम्हें हुक्म देते हैं कि एक गाय ज़िबह करो।**'

और उनका पहला जवाब: '**अ तत्तख़िज़ुना हुज़ुवा — क्या तुम हमें मज़ाक़ बना रहे हो?**' और उन्होंने कहा: '**अ'ऊज़ु बिल्लाहि अन अकून मिनल्-जाहिलीन** — मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि जाहिलों में से हूँ।'

बेटा, **हुक्म सादा था: एक गाय ज़िबह करो। कोई भी गाय। अगर वो निकलते और पहली ही गाय ज़िबह कर देते जो मिल जाती, तो मामला वहीं ख़त्म हो जाता।**

उसके बजाए: '**क़ालुद्-'उ लना रब्बक युबय्यिल्-लना मा हिय** — अपने रब से दुआ करो कि हमारे लिए वाज़ेह करे कि **वो कैसी है।**' और जवाब आया: एक ऐसी गाय जो न बूढ़ी हो न बछिया, दरमियानी उम्र की।

'**क़ालुद्-'उ लना रब्बक युबय्यिल्-लना मा लौनुहा — उसका रंग क्या है?**' एक ज़र्द गाय, चटकदार रंग, देखने वालों को भाने वाली।

'**क़ालुद्-'उ लना रब्बक युबय्यिल्-लना मा हिय इन्नल्-बक़र तशाबह 'अलैना** — गायें तो हमें एक जैसी लगती हैं।' और जवाब और ज़्यादा शर्तें ले कर आया: एक ऐसी गाय जो न हल जोतती हो न खेती सींचती, सही-सलामत, जिसमें कोई धब्बा न हो।

'**क़ालुल्-आन जिअ्त बिल्-हक़्क़ — अब तुम हक़ लाए — फ़-ज़बहूहा व मा कादू यफ़्'अलून — तो उन्होंने उसे ज़िबह किया, और वो क़रीब था कि करते ही न।**'

बेटा, सबक़ लीजिए। **उनका हर सवाल हुक्म को मुश्किल बनाता गया। हर मुतालबे के साथ तफ़्सील तंग होती गई यहाँ तक कि मुल्क में सिर्फ़ एक ही जानवर उस पर पूरा उतर सकता था**, और रिवायात कहती हैं कि उन्हें उसे बहुत बड़ी क़ीमत पर ख़रीदना पड़ा।

बेटा, **यही होता है जब अल्लाह के हुक्म पर हद से ज़्यादा सवाल किए जाएँ। 'मगर क्यों?' 'मगर कौनसी?' 'मगर किन शर्तों पर?' — जब कि दरवाज़ा चौड़ा खुला था और आप उस से गुज़र सकते थे।**

और आख़िरी जुमला ग़ौर कीजिए: '**व मा कादू यफ़्'अलून**' — और वो **क़रीब था कि करते ही न।** उस सब के बाद भी, इताअत मुश्किल से हुई।

नबी ﷺ ने फ़रमाया: **मुझे वैसे ही छोड़ दो जैसे मैंने तुम्हें छोड़ दिया; तुम से पहले के लोग अपने हद से ज़्यादा सवालों और अपने अंबिया से इख़्तिलाफ़ की वजह से हलाक हुए।** और आपने फ़रमाया: **जब मैं तुम्हें किसी चीज़ का हुक्म दूँ, तो उस में से उतना करो जितना तुम से हो सके।**

बेटा, तो **जब आप अल्लाह का कोई हुक्म जानें, पहला रद्द-ए-अमल उसे करना होना चाहिए, उसकी पूछ-ताछ नहीं।**

और फिर सूरह बयान करती है कि दिल की सख़्ती कैसी होती है: '**सुम्म क़सत क़ुलूबुकुम मिम्-ब'अ्दि ज़ालिक फ़-हिय कल्-हिजारति औ अशद्दु क़स्वह — फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, पत्थरों जैसे या उस से भी ज़्यादा सख़्त।**'

और फिर, बेटा, एक ग़ैर-मामूली मुक़ाबला: '**व इन्न मिनल्-हिजारति लमा यतफ़ज्जरु मिन्हुल्-अन्हार — और बेशक कुछ पत्थर ऐसे हैं जिन से नहरें फूट पड़ती हैं — व इन्न मिन्हा लमा यश्शक़्क़ुक़ु फ़-यख़्रुजु मिन्हुल्-मा — और कुछ ऐसे हैं जो फट जाते हैं और उन से पानी निकलता है — व इन्न मिन्हा लमा यह्बितु मिन ख़श्यतिल्-लाह — और कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं।**'

बेटा, **एक चट्टान फट कर पानी दे सकती है। एक चट्टान अपने ख़ालिक़ के डर से गिर सकती है। और एक इंसानी दिल उस से भी ज़्यादा सख़्त हो सकता है।**

इब्राहीम बुनियादें उठाते हैं

बेटा, फिर सूरह इब्राहीम (अलैहि0) की तरफ़ मुड़ती है, और एक बड़ा सवाल तय कर देती है: **उनपर दावा करने का हक़ किस को है?**

'**व इज़िब्-तला इब्राहीम रब्बुहू बि-कलिमातिन फ़-अतम्महुन्न — और जब इब्राहीम को उसके रब ने कुछ अहकाम से आज़माया, और उसने उन्हें पूरा किया — क़ाल इन्नी जा'इलुक लिन्-नासि इमामा — उसने कहा: बेशक मैं तुझे लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ।**'

'**क़ाल व मिन ज़ुर्रिय्यती — उसने कहा: और मेरी औलाद में से? — क़ाल ला यनालु 'अह्दिज़्-ज़ालिमीन — उसने कहा: मेरा अह्द ज़ालिमों तक नहीं पहुँचता।**'

बेटा, ये जवाब ग़ौर कीजिए। **दीन में क़ियादत विरासत में नहीं मिलती। एक नेक बाप अपना दर्जा एक ना-लायक़ बेटे को मुंतक़िल नहीं करता।**

और फिर वो घर: '**व इज़ ज'अल्नल्-बैत मसाबतल्-लिन्-नासि व अम्ना — और हमने उस घर को लोगों के लिए लौटने की जगह और अमन बनाया — वत्तख़िज़ू मिम्-मक़ामि इब्राहीम मुसल्ला** — और मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ।'

बेटा, '**मसाबतल्-लिन्-नास**' — एक ऐसी जगह जहाँ लोग बार बार **लौटते** हैं। **जो भी मक्का गया है वो उस खिंचाव को जानता है।**

और इब्राहीम की उस शहर के लिए दुआ, बेटा: '**रब्बिज्-'अल हाज़ा बलदन आमिनंव्-वर्ज़ुक़ अह्लहू मिनस्-समराति मन आमन मिन्हुम बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िर** — मेरे रब, इसे एक पुर-अमन शहर बना और उसके रहने वालों को फलों का रिज़्क़ दे — उन में से जो अल्लाह और आख़िरी दिन पर ईमान लाएँ।'

और अल्लाह का जवाब: '**व मन कफ़र फ़-उमत्ति'उहू क़लीला — और जो कुफ़्र करे — मैं उसे भी थोड़ा सा फ़ायदा दूँगा।**'

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए। **इब्राहीम ने सिर्फ़ मोमिनीन के लिए रिज़्क़ माँगा। और अल्लाह ने कहा: नहीं — इस दुनिया का रिज़्क़ मुंकिर को भी मिलता है, कुछ अर्से के लिए।**

बेटा, ये एक आम फ़र्ज़ की अहम तस्हीह है। **दुनियावी रिज़्क़ अल्लाह की रज़ामंदी की निशानी नहीं। वो उन को भी खिलाते हैं जो उनका इनकार करते हैं। उन से जो रोक लिया जाता है वो आख़िरत है।**

और फिर, बेटा, इस सूरह का सब से ख़ूबसूरत मंज़र:

'**व इज़ यर्फ़'उ इब्राहीमुल्-क़वा'इद मिनल्-बैति व इस्माईल — और जब इब्राहीम उस घर की बुनियादें उठा रहे थे, इस्माईल के साथ,** (ये कहते हुए): **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना — हमारे रब, ये हम से क़ुबूल फ़रमा — इन्नक अन्तस्-समी'उल्-'अलीम** — बेशक, तू ही सुनने वाला, जानने वाला है।'

बेटा, इसका तसव्वुर कीजिए। **एक बाप और बेटा, अल्लाह का घर अपने हाथों से बना रहे हैं, गर्मी में, पत्थर दर पत्थर — इंसानी तारीख़ का सब से मो'अज़्ज़ज़ ता'मीरी काम।**

और वो काम करते हुए क्या कह रहे हैं? '**देखो हमने क्या बना दिया' नहीं। वो अल्लाह से क़ुबूल करने की इल्तिजा कर रहे हैं। काम करते हुए, और डरते हुए कि शायद ये काफ़ी अच्छा न हो।**

बेटा, **यही मेयार है। अगर का'बा बनाने वाले क़ुबूलियत की फ़िक्र कर रहे थे, तो हमारा कोई अमल अपनी ही तारीफ़ के साथ नहीं होना चाहिए।**

'**रब्बना वज्'अल्ना मुस्लिमैनि लक व मिन ज़ुर्रिय्यतिना उम्मतम्-मुस्लिमतल्-लक** — हमारे रब, हमें अपने लिए फ़रमाँबरदार बना, और हमारी नस्ल में से एक फ़रमाँबरदार उम्मत — **व अरिना मनासिकना व तुब 'अलैना** — और हमें हमारे तरीक़े दिखा और हमारी तौबह क़ुबूल कर।'

और फिर, बेटा, वो दुआ जिसका जवाब छे सदियों बाद आया: '**रब्बना वब्'अस फ़ीहिम रसूलम्-मिन्हुम यत्लू 'अलैहिम आयातिक व यु'अल्लिमुहुमुल्-किताब वल्-हिक्मत व युज़क्कीहिम — हमारे रब, उन में उन्ही में से एक रसूल भेज जो उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें किताब और हिकमत सिखाए और उन्हें पाक करे — इन्नक अन्तल्-'अज़ीज़ुल्-हकीम**।'

बेटा, नबी ﷺ ने फ़रमाया: **मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ हूँ।**

बेटा, इस के बारे में सोचिए। **एक आदमी एक ख़ाली वादी में खड़ा, पत्थर रखता हुआ, एक रसूल के लिए दुआ करता है — और जवाब दो हज़ार साल से ज़्यादा के बाद आया, और वो आप तक पहुँचा, आपकी ज़ुबान में, आपके घर में, आज।**

कभी ये मत समझिए कि कोई दुआ बे-जवाब गई क्योंकि आपने उसे अपनी ज़िंदगी में पूरा होते नहीं देखा।

'**व मंय्यर्ग़बु 'अम्-मिल्लति इब्राहीम इल्ला मन सफ़िह नफ़्सह — और कौन इब्राहीम के दीन से मुँह मोड़ेगा सिवाए उस के जो ख़ुद को बेवक़ूफ़ बनाए? — इज़ क़ाल लहू रब्बुहू अस्लिम क़ाल अस्लम्तु लि-रब्बिल्-'आलमीन — जब उसके रब ने उस से कहा: सुपुर्द हो जा — उसने कहा: मैं जहानों के रब के सुपुर्द हो गया।**'

बेटा, **हुक्म का एक लफ़्ज़ और जवाब का एक लफ़्ज़। अल्लाह और इब्राहीम के दरमियान इस गुफ़्तगू में पूरा इस्लाम है।**

और ये हिस्सा ख़त्म होता है: '**तिल्क उम्मतुन क़द ख़लत लहा मा कसबत व लकुम मा कसब्तुम — वो एक उम्मत थी जो गुज़र गई। उसके लिए वो है जो उसने कमाया,**

और तुम्हारे लिए वो है जो तुमने कमाया — व ला तुस्अलून 'अम्मा कानू यअ्मलून — और तुम से उस के बारे में नहीं पूछा जाएगा जो वो करते थे।'

बेटा, **ये आयत इस सूरह में दो बार दोहराई गई है, और ये ख़ानदानी नसब की हर बहस ख़त्म कर देती है। किसी से उसके बाप-दादा के अमल के बारे में नहीं पूछा जाएगा। आप से आपके बारे में पूछा जाएगा।**

बेटा, हम यहाँ रुकेंगे, उस मुक़ाम पर जहाँ घर दोबारा खड़ा हो चुका और एक रसूल के लिए दुआ की जा चुकी। दूसरे हिस्से में हम क़िबला की तबदीली, रोज़ा, क़ानून, क़ुरआन की सब से अज़ीम आयत, और वो दो आयतें लेंगे जो नबी ﷺ को आसमानों के ऊपर दी गईं।

चेहरे का फिरना

बेटा, हिजरत के बाद तक़रीबन सोलह महीने तक मुसलमान बैत-उल-मक़्दिस की तरफ़ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ते रहे। और नबी ﷺ अपना चेहरा आसमान की तरफ़ उठाते रहते थे, इब्राहीम के घर के मुश्ताक़।

'क़द नरा तक़ल्लुब वज्हिक फ़िस्-समा — हमने यक़ीनन तुम्हारे चेहरे का आसमान की तरफ़ फिरना देखा — फ़-ल-नुवल्लियन्नक क़िब्लतन तर्ज़ाहा — तो हम तुम्हें ज़रूर उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिस से तुम राज़ी होगे — फ़-वल्लि वज्हक शत्रल्-मस्जिदिल्-हराम — तो अपना चेहरा मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ फेर लो।'

बेटा, इस में जो नर्मी है वो ग़ौर कीजिए। **उन्होंने माँगा नहीं। उन्होंने आसमान की तरफ़ देखा, और अल्लाह ने उस नज़र का जवाब दे दिया।**

और ए'तिराज़ करने वालों ने फ़ौरन कहा: उन्हें उस क़िबले से किस चीज़ ने फेर दिया जिसकी तरफ़ वो रुख़ करते थे? और अल्लाह का जवाब: '**क़ुल लिल्लाहिल्-मश्रिक़ु वल्-मग़्रिब — कहो: मशरिक़ और मग़रिब अल्लाह ही के हैं।'**

बेटा, **सिम्त कभी अस्ल बात न थी। इताअत थी। वही लोग जो हुक्म पर बैत-उल-मक़्दिस की तरफ़ रुख़ करते थे अब हुक्म पर मक्का की तरफ़ रुख़ कर रहे हैं —**

और दोनों बार इबादत का अमल सुपुर्दगी थी, जुग़राफ़िया नहीं।

'व कज़ालिक ज'अल्नाकुम उम्मतंव्-वसतल्-लि-तकूनू शुहदा-अ 'अलन्-नासि व यकूनर्-रसूलु 'अलैकुम शहीदा — और यूँ हमने तुम्हें एक मो'तदिल उम्मत बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाह हो, और रसूल तुम पर गवाह हो।'

बेटा, '**उम्मतंव्-वसता**' — दरमियानी, मो'तदिल उम्मत। **किसी भी सिम्त में इंतेहा नहीं: राहिबों की तरह जिस्म का इनकार नहीं, और न उन की तरह उस में डूब जाना जो और कुछ पहचानते ही नहीं। इफ़्रात और ग़फ़लत के दरमियान — इबादत में, ख़र्च में, ग़ुस्से में, हर चीज़ में।**

'व मा ज'अल्नल्-क़िब्लतल्-लती कुन्त 'अलैहा इल्ला लि-नअ्लम मंय्यत्तबि'उर्-रसूल मिम्मंय्यन्क़लिबु 'अला 'अक़िबैह — और हमने वो क़िबला जिसकी तरफ़ तुम रुख़ करते थे सिर्फ़ इस लिए मुक़र्रर किया था कि ज़ाहिर हो जाए कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन अपनी एड़ियों पर पलट जाता है।'

बेटा, **ख़ुद ये तबदीली एक इम्तेहान थी। कुछ लोग उस चीज़ में तबदीली बर्दाश्त नहीं कर पाते जिसके वो आदी हों, चाहे वो वही के ज़रिए ही क्यों न आए।**

और फिर, बेटा, हर उस शख़्स के लिए एक आयत जिसने किसी अच्छे काम में किसी अपने को खोया हो: '**व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्-लाहि अम्वात बल अह्या-उंव्-व लाकिल्-ला तश्'उरून — और जो अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाएँ उन्हें मुर्दा मत कहो। बल्कि वो ज़िंदा हैं — मगर तुम शु'ऊर नहीं रखते।'**

और फिर आज़माइश की वो अज़ीम आयत, बेटा:

'व ल-नब्लुवन्नकुम बि-शै-इम्-मिनल्-ख़ौफ़ि वल्-जू'इ व नक़्सिम्-मिनल्-अम्वालि वल्-अन्फ़ुसि वस्-समरात — और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएँगे कुछ ख़ौफ़ से और भूक से, और मालों, जानों और फलों की कमी से — व बश्शिरिस्-साबिरीन — और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दो।'

'अल्लज़ीन इज़ा असाबत्हुम मुसीबतुन क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजि'ऊन — जो, जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती है, कहते हैं: बेशक हम अल्लाह के

हैं और बेशक उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं।'

बेटा, इस जुमले के दोनों हिस्से देखिए, क्योंकि यही ग़म का पूरा इलाज है।

'**इन्ना लिल्लाह**' — हम अल्लाह **के** हैं। तो **जो चीज़ ली गई वो पहले भी हमारी थी ही नहीं। जिसे आपने खोया वो एक अमानत थी, आपको उधार दी गई, और मालिक ने अपनी चीज़ वापस ले ली।**

'**व इन्ना इलैहि राजि'ऊन**' — और हम उसी की तरफ़ **लौट** रहे हैं। तो **जुदाई आरिज़ी है, और आप दोनों एक ही सिम्त में सफ़र कर रहे हैं।**

'**उलाइक 'अलैहिम सलवातुम्-मिर्-रब्बिहिम व रहमह — यही वो लोग हैं जिन पर उनके रब की तरफ़ से इनायतें और रहमत हैं — व उलाइक हुमुल्-मुह्तदून — और यही हिदायत-याफ़्ता हैं।'**

बेटा, आज़माइश की आयत में लफ़्ज़ '**शै-इन**' ग़ौर कीजिए — '**कुछ** ख़ौफ़ से, **कुछ** भूक से'। **पूरा नहीं। एक हिस्सा। इम्तेहान में भी मिक़दार महदूद है।**

रोज़ा, और वो क़ुर्बत

फिर सूरह क़ानून की अज़ीम आयतें देती है, बेटा — और उन में रोज़ा:

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू कुतिब 'अलैकुमुस्-सियामु कमा कुतिब 'अलल्-लज़ीन मिन क़ब्लिकुम ल'अल्लकुम तत्तक़ून — ऐ ईमान वालो, तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जैसे तुम से पहले वालों पर फ़र्ज़ किया गया, ताकि तुम परहेज़गार बनो।'**

बेटा, बयान किया गया मक़्सद ग़ौर कीजिए: '**ल'अल्लकुम तत्तक़ून**' — **ताकि तुम तक़वा हासिल करो। रोज़ा बर्दाश्त का इम्तेहान नहीं और ये खाने के बारे में भी नहीं। ये उस चीज़ को उन के लिए छोड़ने की तर्बियत है जो जायज़ है, ताकि हराम छोड़ना आसान हो जाए।**

'**शहु रमज़ानल्-लज़ी उन्ज़िल फ़ीहिल्-क़ुरआनु हुदल्-लिन्-नासि व बय्यिनातिम्-मिनल्-हुदा वल्-फ़ुरक़ान** — रमज़ान का महीना, जिस में क़ुरआन उतारा गया, लोगों के लिए हिदायत और हिदायत की वाज़ेह दलीलें और कसौटी।'

'**युरीदुल्-लाहु बिकुमुल्-युस्र व ला युरीदु बिकुमुल्-'उस्र — अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहते हैं और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहते।**'

बेटा, **ये जुमला हर उस शख़्स की दीवार पर लिखा होना चाहिए जो समझता है कि दीनदारी का मतलब चीज़ों को मुश्किल बनाना है।**

और फिर, बेटा, रोज़े की आयतों के बिल्कुल बीच में — एक जवाहर:

'**व इज़ा सअलक 'इबादी 'अन्नी फ़-इन्नी क़रीब — और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें — तो बेशक मैं क़रीब हूँ — उजीबु द'अ्वतद्-दा'इ इज़ा द'आन — मैं पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब वो मुझे पुकारे — फ़ल्-यस्तजीबू ली वल्-युअ्मिनू बी ल'अल्लहुम यर्शुदून** — तो उन्हें चाहिए कि मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएँ, ताकि वो राह पाएँ।'

बेटा, ये आयत बे-मिसाल है। **क़ुरआन में कहीं और, जब लोग किसी चीज़ के बारे में पूछते हैं, जवाब 'क़ुल' — कहो — से शुरू होता है। यहाँ, अल्लाह दरमियानी वास्ता पूरी तरह हटा देते हैं। वो ये नहीं कहते 'उन्हें बता दो कि मैं क़रीब हूँ'। वो कहते हैं: मैं क़रीब हूँ।**

बेटा, देखिए एक ही लाइन में वो कितनी बार अपनी ज़ात से बात करते हैं: **मैं क़रीब हूँ, मैं जवाब देता हूँ, जब वो मुझे पुकारे, मेरी बात मानें, मुझ पर ईमान लाएँ।**

और ये रोज़े की आयतों के बीच रखी गई — **क्योंकि तब दरवाज़ा सब से ज़्यादा खुला होता है।**

फिर सूरह बहुत से मामलात पर अहकाम देती है — हज्ज, सिर्फ़ उन से लड़ना जो तुम से लड़ें और हद से न बढ़ना, निकाह और तलाक़, यतीमों के साथ सुलूक, जुदाई में औरतों के हुक़ूक़ — और इन में से हर एक अल्लाह के डर में लिपटा हुआ है।

और सदक़े पर, बेटा, देने के बारे में एक हिदायत: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम**' — उस में से ख़र्च करो जो हमने तुम्हें दिया — और फिर एक तंबीह: '**व ला तयम्ममुल्-ख़बीस मिन्हु तुन्फ़िक़ून — और उस में से घटिया का इरादा मत करो कि उसे ख़र्च करो — व लस्तुम बि-आख़िज़ीहि इल्ला अन**

तुग़्मिज़ू फ़ीह — जब कि तुम ख़ुद उसे न लेते सिवाए आँखें बंद कर के।'

बेटा, **एक ख़ास क़िस्म के सदक़े का क्या ख़ूब बयान है: ठीक वो चीज़ दे देना जिसे आप ख़ुद लेने से इनकार कर देते।**

तालूत, और वो छोटी जमाअत

फिर सूरह उन लोगों का ज़िक्र करती है जिन्होंने अपने नबी से एक बादशाह मुक़र्रर करने को कहा ताकि वो लड़ सकें, बेटा — और फिर, जब लड़ना फ़र्ज़ हुआ, उन में से ज़्यादा तर मुँह मोड़ गए।

और जब तालूत मुक़र्रर हुए, उन्होंने ए'तिराज़ किया: उसका हम पर हुक्म कैसे हो सकता है जब कि हम ज़्यादा हक़दार हैं, और उसे माल की फ़रावानी भी नहीं दी गई?

और जवाब: **'इन्नल्-लाहस्-तफ़ाहु 'अलैकुम व ज़ादहू बस्ततन फ़िल्-'इल्मि वल्-जिस्म — बेशक, अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे इल्म और जिस्म में वुस'अत दी है — वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मंय्यशा — और अल्लाह अपनी बादशाहत जिसे चाहें देते हैं।'**

बेटा, जो सलाहियतें नाम की गईं वो ग़ौर कीजिए: **इल्म और जिस्मानी सलाहियत। माल नहीं, और नसब नहीं।**

और फिर वो नहर, बेटा — क़ुरआन के सब से सबक़-आमोज़ इम्तेहानों में से एक। तालूत ने अपने लश्कर से कहा: **अल्लाह तुम्हें एक नहर से आज़माएँगे; जो उस में से पिए वो मेरा नहीं, सिवाए उस के जो अपनी हथेली से एक चुल्लू भर ले।**

'फ़-शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम्-मिन्हुम — मगर उन्होंने उस में से पी लिया, सिवाए उन में से थोड़े से के।'

बेटा, **एक लश्कर जिसने लड़ने का मुतालबा किया था, एक नहर पर नाकाम हो गया।**

और फिर जिन्होंने पार किया उन्होंने कहा: आज हमारे पास जालूत और उसके

लश्करों के मुक़ाबले में कोई ताक़त नहीं। '**क़ालल्-लज़ीन यज़ुन्नून अन्नहुम मुलाक़ुल्-लाहि कम मिन फ़ि-अतिन क़लीलतिन ग़लबत फ़ि-अतन कसीरतम्-बि-इज़्निल्-लाह — जिन्हें यक़ीन था कि वो अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा: कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के इज़्न से बड़ी जमाअतों पर ग़ालिब आ गईं — वल्लाहु म'अस्-साबिरीन**।'

और उनकी दुआ, बेटा, किसी भी भारी सूरत-ए-हाल के लिए याद कर लेने लायक़ है: '**रब्बना अफ़्रिग़ 'अलैना सब्रंव्-व सब्बित अक़्दामना वन्सुर्ना 'अलल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन — हमारे रब, हम पर सब्र उंडेल दे, और हमारे क़दम जमा दे, और हमें फ़तह दे।**'

बेटा, '**अफ़्रिग़ 'अलैना सब्रा**' — हम पर सब्र **उंडेल** दे, जिस तरह बर्तन से पानी उंडेला जाता है यहाँ तक कि हर चीज़ ढँक जाए। '**हमें थोड़ा सब्र दे' नहीं। उंडेल दे।**

और दाऊद (अलैहि0), उस छोटी जमाअत में एक नौजवान, ने जालूत को क़त्ल किया। '**व लौला दफ़्'उल्-लाहिन्-नास ब'अ्ज़हुम बि-ब'अ्ज़िल्-लफ़सदतिल्-अर्ज़ — और अगर अल्लाह लोगों को, कुछ को दूसरों के ज़रिए, न रोकते, तो ज़मीन में फ़साद फैल जाता।**'

सब से अज़ीम आयत

और अब, बेटा, हम उस आयत तक पहुँचे जिसे नबी ﷺ ने **अल्लाह की किताब की सब से अज़ीम आयत** बताया। आपने उबय्य इब्न का'ब (रज़ि0) से पूछा कि अल्लाह की किताब की कौनसी आयत वो सब से अज़ीम समझते हैं, और जब उन्होंने जवाब दिया 'अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल्-हय्युल्-क़य्यूम', तो नबी ﷺ ने उनके सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया: **इल्म तुम्हारे लिए ख़ुश-गवार हो, ऐ अबुल-मुन्ज़िर।**

और आपने ﷺ फ़रमाया कि जो इसे हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़े, उसे जन्नत में दाख़िल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकती। और अबू हुरैरह (रज़ि0) की उस रिवायत में जो रमज़ान के सदक़े पर रात आने वाले चोर के बारे में है, उसे बताया गया कि अगर वो अपने बिस्तर पर जाते वक़्त ये आयत पढ़े, तो अल्लाह की

तरफ़ से एक निगेहबान उसके साथ रहेगा और सुब्ह तक कोई शैतान उसके क़रीब न आएगा — और नबी ﷺ ने तस्दीक़ की कि **उस झूठे ने उसे सच बताया।**

'अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल्-हय्युल्-क़य्यूम — अल्लाह — उसके सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िंदा, सब को क़ायम रखने वाला।'

बेटा, '**अल-हय्य**' — ज़िंदा, जिसकी ज़िंदगी का न कोई आग़ाज़ था न अंजाम है। '**अल-क़य्यूम**' — **वो जो ख़ुद अपने बल पर क़ायम है और जिसके सबब बाक़ी हर चीज़ क़ायम है। वुजूद में कोई चीज़ ख़ुद को थामे नहीं।**

'ला तअ्ख़ुज़ुहू सिनतुंव्-व ला नौम — उसे न ऊँघ आती है न नींद।'

बेटा, '**सिनह**' वो पहला बोझ है जो नींद से पहले आँखों पर आता है। **वो भी नहीं। क्योंकि अगर कायनात को थामे रखने वाला एक लम्हे के लिए भी नज़र हटा ले, तो सब ख़त्म हो जाए।**

'लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ — आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसी का है।'

'मन ज़ल्-लज़ी यश्फ़'उ 'इन्दहू इल्ला बि-इज़्निह — कौन है जो उसके पास सिफ़ारिश करे सिवाए उसकी इजाज़त से?'

बेटा, **ये जुमला हर वास्ते का दरवाज़ा बंद कर देता है। उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने कोई नहीं बोलता।**

'यअ्लमु मा बैन ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़हुम — वो जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है — व ला युहीतून बि-शै-इम्-मिन 'इल्मिही इल्ला बिमा शा — और वो उसके इल्म में से कुछ भी घेर नहीं सकते सिवाए उस के जो वो चाहे।'

बेटा, **जो कुछ भी किसी इंसान ने कभी जाना — हर साइंस, हर दरयाफ़्त, हर लिखी गई किताब — वो एक हिस्सा है जिसे उन्होंने हम तक पहुँचने दिया।**

'वसि'अ कुर्सिय्युहुस्-समावाति वल्-अर्ज़ — उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन को घेरे हुए है — व ला य-ऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा — और उन दोनों की हिफ़ाज़त उसे

थकाती नहीं — व हुवल्-'अलिय्युल्-'अज़ीम — और वही बुलंद, अज़ीम है।'

बेटा, '**ला य-ऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा' — आसमानों और ज़मीन को सँभालना उन पर ज़र्रा भर बोझ नहीं। हर ज़र्रा, हर दिल की धड़कन, हर गिरता पत्ता, हर गर्दिश — थामी हुई, बिना किसी मशक़्क़त के।**

बेटा, **ये आयत सीखिए, अपने बच्चों को सिखाइए, और हर नमाज़ के बाद और सोने से पहले पढ़िए।**

और उसके फ़ौरन बाद, बेटा: '**ला इक्राह फ़िद्-दीनि क़त्-तबय्यनर्-रुश्दु मिनल्-ग़य्य — दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं; हिदायत गुमराही से अलग वाज़ेह हो चुकी।**'

बेटा, इसकी जगह ग़ौर कीजिए। **अल्लाह की मुतलक़ क़ुदरत के बयान के फ़ौरन बाद — उस क़ुदरत के जो हर चीज़ पर मजबूर कर सकती है — ये बयान आता है कि इस दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं। वो जो हर एक को मजबूर कर सकते थे, उन्होंने न करना चुना।**

'**फ़-मंय्यक्फ़ुर बित्-ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्-तम्सक बिल्-'उर्वतिल्-वुस्क़ा लन्फ़िसाम लहा** — तो जो बातिल माबूदों का इनकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए **उसने सब से मज़बूत कड़ा थाम लिया, जो कभी टूटने वाला नहीं।**'

'**अल्लाहु वलिय्युल्-लज़ीन आमनू युख़्रिजुहुम मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्-नूर — अल्लाह उन के कारसाज़ हैं जो ईमान लाए; वो उन्हें अंधेरों से निकाल कर नूर में ले आते हैं।**'

सात सौ दाने

फिर सूरह ख़र्च करने पर एक लंबा और ख़ूबसूरत हिस्सा देती है, बेटा — और ये क़ुरआन में सदक़े का सब से तफ़्सीली बयान है।

'**मसलुल्-लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्-लाहि क-मसलि हब्बतिन अम्बतत सब्'अ सनाबिल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम्-मि-अतु हब्बह — जो अपने माल**

अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस दाने जैसी है जिस से सात बालियाँ उगें, हर बाली में सौ दाने — वल्लाहु युज़ा'इफ़ु लिमंय्यशा — और अल्लाह जिसे चाहें और बढ़ा देते हैं।'

बेटा, **एक दाना, सात सौ दाने। और 'अल्लाह जिसे चाहें बढ़ा देते हैं' — यानी वो भी हद नहीं।**

मगर फिर शर्तें, बेटा: '**अल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्-लाहि सुम्म ला युत्बि'ऊन मा अन्फ़क़ू मन्नंव्-व ला अज़ा** — जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं **और फिर जो ख़र्च किया उस के पीछे एहसान जताना या अज़ियत नहीं लगाते।**'

बेटा, '**मन्न**' — उस शख़्स को याद दिलाना कि तुमने उसे क्या दिया। '**अज़ा**' — उसे तकलीफ़ देना, ज़लील करना, दूसरों के सामने उसका ज़िक्र करना।

'**क़ौलुम्-म'ऊफ़ुंव्-व मग़्फ़िरतुन ख़ैरुम्-मिन सदक़तिंय्यत्ब'उहा अज़ा — एक अच्छी बात और दर-गुज़र उस सदक़े से बेहतर है जिसके पीछे अज़ियत हो।**'

बेटा, **तो एक नर्म इनकार उस तोहफ़े से बेहतर है जिसके साथ ज़िल्लत जुड़ी हो।**

'**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू ला तुब्तिलू सदक़ातिकुम बिल्-मन्नि वल्-अज़ा — अपने सदक़े एहसान जता कर या अज़ियत दे कर बातिल मत करो**' — और फिर एक चिकनी चट्टान की मिसाल जिस पर मिट्टी हो, और उस पर मूसलाधार बारिश पड़े और उसे नंगा छोड़ जाए।

बेटा, **एक उम्र का देना एक चट्टान से धो कर बह सकता है, सिर्फ़ इस वजह से कि आपने बाद में उस के बारे में कैसे बात की।**

'**अश्-शैतानु य'इदुकुमुल्-फ़क़्र व यअ्मुरुकुम बिल्-फ़ह्शा — शैतान तुम्हें ग़ुर्बत से डराता है और तुम्हें बे-हयाई का हुक्म देता है — वल्लाहु य'इदुकुम मग़्फ़िरतम्-मिन्हु व फ़ज़्ला — जब कि अल्लाह तुम से अपनी तरफ़ से मग़्फ़िरत और फ़ज़्ल का वादा करते हैं।**'

बेटा, **ठीक वही आवाज़ है जो आप सुनते हैं जब आप कुछ देने लगते हैं: 'तुम्हें इसकी**

ज़रूरत पड़ेगी'। आयत उसके सरचश्मे का नाम ले देती है।

'**व मंय्युअ्तल्-हिक्मत फ़-क़द ऊतिय ख़ैरन कसीरा — और जिसे हिकमत दी गई उसे बहुत सी भलाई दी गई।**'

और फिर बा-वक़ार ग़रीबों का बयान, बेटा — ऐसे लोग जिन्हें आप कभी पहचान न पाएँ: '**यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ मिनत्-तअ्फ़्फ़ुफ़ — ना-वाक़िफ़ उन्हें उनकी ख़ुद्दारी की वजह से ग़नी समझता है — तअ्रिफ़ुहुम बि-सीमाहुम — तुम उन्हें उनकी निशानी से पहचानते हो — ला यस्अलूनन्-नास इल्हाफ़ा — वो लोगों से चिमट कर नहीं माँगते।**'

बेटा, **ऐसे लोगों को ढूँढिए। वो आपके पास नहीं आएँगे।**

और फिर देने के वक़्त के बारे में वो आयत: '**अल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम बिल्-लैलि वन्-नहारि सिर्रंव्-व 'अलानियतन फ़-लहुम अज्रुहुम 'इन्द रब्बिहिम** — जो अपने माल रात और दिन, छुप कर और खुले-आम ख़र्च करते हैं — उनके लिए उनके रब के पास उनका अज्र है — **व ला ख़ौफ़ुन 'अलैहिम व ला हुम यह्ज़नून**।'

सूद के ख़िलाफ़ जंग

और फिर, बेटा, सूरह रिबा — सूद — की तरफ़ मुड़ती है, और ज़ुबान ऐसी है जैसी क़ुरआन में और कहीं नहीं।

'**अल्लज़ीन यअ्कुलूनर्-रिबा ला यक़ूमून इल्ला कमा यक़ूमुल्-लज़ी यतख़ब्बतुहुश्-शैतानु मिनल्-मस्स — जो सूद खाते हैं वो खड़े न होंगे मगर उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने छू कर पागल कर दिया हो।**'

'**ज़ालिक बि-अन्नहुम क़ालू इन्नमल्-बै'उ मिस्लुर्-रिबा — ये इस लिए कि वो कहते हैं: तिजारत तो सूद ही जैसी है — व अहल्लल्-लाहुल्-बै'अ व हर्रमर्-रिबा — हालाँकि अल्लाह ने तिजारत हलाल की और सूद हराम किया।**'

'**यम्हक़ुल्-लाहुर्-रिबा व युर्बिस्-सदक़ात — अल्लाह सूद को मिटाते हैं और सदक़ों**

को बढ़ाते हैं।'

बेटा, ज़ाहिर का उल्टा जाना ग़ौर कीजिए। **सूद बढ़ोतरी लगता है और अल्लाह उसे 'मह्क़' कहते हैं — मिट जाना, चाँद के घटने के लिए इस्तेमाल होने वाला लफ़्ज़। और सदक़ा नुक़सान लगता है, और वो उसे बढ़ोतरी कहते हैं।**

'फ़-इल्-लम् तफ़्'अलू फ़अ्ज़नू बि-हर्बिम्-मिनल्-लाहि व रसूलिह — और अगर तुम ऐसा न करो तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जंग का एलान सुन लो।'

बेटा, **क़ुरआन में कोई दूसरा गुनाह ऐसा नहीं जिसे अल्लाह की तरफ़ से जंग कहा गया हो। सोचिए ये उस मईशत के बारे में क्या कहता है जो इसी पर खड़ी हो।**

'व इन काना ज़ू 'उस्रतिन फ़-नज़िरतुन इला मैसरह — और अगर कोई तंगी में हो तो उसे आसानी तक मोहलत दो — व अन तसद्दक़ू ख़ैरुल्-लकुम इन कुन्तुम तअ्लमून — और अगर तुम उसे सदक़ा कर दो तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो।'

बेटा, सीढ़ी देखिए: **उसे वक़्त दीजिए; और अगर आप कर सकें, तो क़र्ज़ पूरी तरह माफ़ कर दीजिए।**

'वत्तक़ू यौमन तुर्जऊन फ़ीहि इलल्-लाह — और उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे — सुम्म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा कसबत व हुम ला युज़्लमून।'

बेटा, रिवायात में है कि **ये आख़िरी उतरने वाली आयतों में से थी।**

और फिर पूरे क़ुरआन की सब से लंबी आयत आती है — **क़र्ज़ की आयत**, जो हुक्म देती है कि उधार लिख लिया जाए, गवाहों के साथ, ठीक ठीक, और लिखने से उकताओ मत, छोटा हो या बड़ा।

बेटा, इस के बारे में सोचिए। **इस किताब की सब से लंबी आयत इबादत की तफ़्सीलात के बारे में नहीं है। ये क़र्ज़ लिख लेने के बारे में है।**

क्योंकि शरीफ़ लोगों के दरमियान ज़्यादा तर झगड़े 'मैंने तो समझा था कि हमारी

बात ये हुई थी...' से शुरू होते हैं — और अल्लाह ने वो दरवाज़ा एक सफ़्हा भर हिदायात से बंद कर दिया।

आख़िरी दो आयतें

और अब, बेटा, हम इस अज़ीम सूरह के इख़्तिताम पर पहुँचे — दो आयतें जिनके बारे में नबी ﷺ ने फ़रमाया कि **ये उन्हें अर्श के नीचे एक ख़ज़ाने से दी गईं, और ये किसी दूसरे नबी को न दी गईं।** और आपने फ़रमाया: **जो रात को सूरह अल-बक़रह की आख़िरी दो आयतें पढ़े, वो उसे काफ़ी हो जाएँगी।**

रिवायत है कि **ये मे'राज की रात, आसमानों के ऊपर दी गईं।**

'**आमनर्-रसूलु बिमा उन्ज़िल इलैहि मिर्-रब्बिही वल्-मुअ्मिनून — रसूल उस पर ईमान लाए जो उनके रब की तरफ़ से उनकी तरफ़ उतारा गया, और मोमिनीन भी — कुल्लुन आमन बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिह — सब अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए — ला नुफ़र्रिक़ु बैन अहदिम्-मिर्-रुसुलिह — हम उसके रसूलों में से किसी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते।**'

'**व क़ालू समिअ्ना व अत'अ्ना — और उन्होंने कहा: हमने सुना और हमने माना — ग़ुफ़्रानक रब्बना व इलैकल्-मसीर — हमारे रब, हमें अपनी मग़्फ़िरत अता कर, और तेरी ही तरफ़ लौटना है।**'

बेटा, '**समिअ्ना व अत'अ्ना**' — **हमने सुना और हमने माना।** इसे इसी सूरह की पहली क़ौमों से मिलाइए, जिन के बारे में कहा गया कि **उन्होंने सुना और ना-फ़रमानी की। दो उम्मतों का पूरा फ़र्क़ एक लफ़्ज़ में है।**

और फिर आख़िरी आयत, बेटा — इसे धीरे पढ़िए, क्योंकि **ये दरख़्वास्तों का एक सिलसिला है, और उन में से हर एक क़ुबूल कर ली गई:**

'**ला युकल्लिफ़ुल्-लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्'अहा — अल्लाह किसी जान पर उसकी गुंजाइश से ज़्यादा बोझ नहीं डालते।**'

बेटा, **यही पूरी शरीअत की बुनियाद है। आप इस वक़्त जिस चीज़ का भी सामना कर रहे हैं, आप में उस की गुंजाइश है — क्योंकि वो गुंजाइश से ज़्यादा नहीं डालते। ये उनका अपना बयान है अपने ही निज़ाम के बारे में।**

'**लहा मा कसबत व 'अलैहा मक्तसबत — उसके लिए वो भलाई है जो उसने कमाई, और उस पर वो बुराई है जो उसने कमाई।**'

'**रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन नसीना औ अख़्तअ्ना — हमारे रब, हमें मत पकड़ अगर हम भूल जाएँ या ग़लती कर बैठें।**' — और रिवायत है कि अल्लाह ने फ़रमाया: **मैंने ऐसा ही किया।**

'**रब्बना व ला तह्मिल 'अलैना इस्रन कमा हमल्तहू 'अलल्-लज़ीन मिन क़ब्लिना — हमारे रब, और हम पर ऐसा बोझ मत डाल जैसा तूने हम से पहले वालों पर डाला।**' — **मैंने ऐसा ही किया।**

'**रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़त लना बिह — हमारे रब, और हम पर वो बोझ मत डाल जिसे उठाने की हम में ताक़त न हो।**' — **मैंने ऐसा ही किया।**

'**वअ्फ़ु 'अन्ना वग़्फ़िर लना वर्हम्ना — और हम से दर-गुज़र कर, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर।**'

बेटा, इन तीन लफ़्ज़ों को साथ ग़ौर कीजिए, क्योंकि ये दोहराव नहीं हैं। "**अफ़्व**" मिटाना है — **कि गुनाह रिकॉर्ड से यूँ मिट जाए गोया वो हुआ ही न था।** '**मग़्फ़िरह**' ढाँकना है — **कि वो छुपा रहे और ज़ाहिर न हो।** '**रहमह**' रहमत है — **कि उस सब के बाद, वो आप पर मेहरबान हों।**

तो: **उसे मिटा दीजिए, उसे छुपा दीजिए, और फिर भी मुझ पर मेहरबानी कीजिए।**

'**अन्त मौलाना फ़न्सुर्ना 'अलल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन — तू ही हमारा कारसाज़ है, तो हमें काफ़िर क़ौम पर फ़तह दे।**'

बेटा, और यूँ **क़ुरआन की सब से लंबी सूरह ख़त्म होती है: किसी हुक्म पर नहीं, बल्कि एक दुआ पर — और एक ऐसी दुआ पर जिसका जवाब जुमला ब जुमला दे दिया गया, उस से पहले कि वो हमें कहने को दी गई।**

बेटा, पलट कर देखिए ये सूरह कहाँ से शुरू हुई थी। **ये खुली थी 'ये वो किताब है, इस में कोई शक नहीं, मुत्तक़ीन के लिए हिदायत' से। और ये बंद होती है इंसानों के 'हमने सुना और हमने माना' कहने और दर-गुज़र माँगने पर।**

इन दो नुक़्तों के दरमियान, इसने आपको सब कुछ दिया: **इंसान की तख़्लीक़, वो फिसलना और लौटने के अल्फ़ाज़, एक क़ौम जिसे हर नेमत मिली और उसने प्याज़ माँगे, एक गाय जो हर सवाल के साथ और मुश्किल होती गई, एक बाप और बेटा एक घर बनाते और क़ुबूलियत की इल्तिजा करते हुए, एक क़िबला जो फेरा गया, एक रोज़ा जो फ़र्ज़ हुआ, एक नहर जिसने एक लश्कर को हरा दिया, अब तक उतरी सब से अज़ीम आयत, एक दाने से सात सौ दाने, सूद पर जंग का एलान, और एक सफ़्हा भर हिदायात एक क़र्ज़ लिख लेने के बारे में।**

बेटा, यही सूरह अल-बक़रह है। **इसे अपने घर में पढ़िए। अपने घर को क़ब्रिस्तान मत बनने दीजिए।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. ये किताब किसी को भी रास्ता दिखा देती है, मगर चलती सिर्फ़ उस के साथ है जो चलने को तैयार हो — और मुनाफ़िक़ सिर्फ़ तब चलता है जब आसान हो।

2. दो गुनाह साथ नाम किए गए: हक़ को बातिल से मिलाना, और उस हक़ पर ख़ामोश रहना जो तुम जानते हो।

3. गाय के बारे में हर सवाल ने हुक्म को मुश्किल कर दिया — जब कोई हुक्म जानो, उसे करो।

4. का'बा बनाने वाले काम करते हुए अल्लाह से क़ुबूलियत की इल्तिजा कर रहे थे — और इब्राहीम की रसूल के लिए दुआ का जवाब दो हज़ार साल बाद आया, और आप तक पहुँचा।

5. 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजि'ऊन' — वो कभी तुम्हारा था ही नहीं, और जुदाई आरिज़ी है।

6. 'और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें — मैं क़रीब हूँ' — उन्होंने जुमले से पैग़ाम पहुँचाने वाले को हटा दिया।

7. सूद बढ़ोतरी लगता है और उसे मिट जाना कहा गया; सदक़ा नुक़सान लगता है और उसे बढ़ोतरी कहा गया — और एक अच्छी बात उस तोहफ़े से बेहतर है जो ज़लील करे।

8. वो किसी जान पर उसकी गुंजाइश से ज़्यादा बोझ नहीं डालते — तो आप जो भी उठाए हुए हैं, आप उसी के लिए बनाए गए थे।

रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन नसीना औ अख़्तअ्ना... वअ्फ़ु 'अन्ना वग़्फ़िर लना वर्हम्ना, अन्त मौलाना। आमीन।